श्रीकुमार उवाच

ॐ कैर्मन्त्रैः कैः स्तवनं तस्य पद्मनाभेरजस्य च।
केन प्रसन्नतां याति राघव सः उदारधीः॥१॥

श्री सनत्कुमार बोले-

हे राघव! उस पद्मनाभ अजन्मा भगवान (विष्णु) का किन-किन मन्त्रों के द्वारा स्तवन किया जाता है और उदार हृदयवाले वे किन-किन मन्त्रों के द्वारा प्रसन्न होते हैं। (वह सुनो!)

निष्क्रान्तः सर्वविघ्नो हि मातुरङ्कविनोदकृत्।
कर्ता भोक्ता च हन्ता च प्रधानप्रभुरव्ययः॥२॥

वे परमपिता परमेश्वर स्वयं अव्यय (अविनाशी) हैं अपनी जननी (माता) की गोद में खेलनेवाले सब प्रकार के विघ्नों से रहित हैं तथा सभी प्राणियों के कर्ता, भोक्ता और पापियों का संहार करनेवाले हैं।

सहायो लक्ष्मणो यस्य वन्दनीयः सुरासुरैः।
दिव्ययोषित्सहस्राणां मनोहारी मनोजवः॥३॥

जिनके सहायक लक्ष्मण हैं जिनकी वन्दना सुर और असुर दोनों कर रहे हैं तथा हजारों दिव्य स्त्रियों के मन को हरण करनेवाले एवं अपने मन की गति से भी गतिमान रहनेवाले हैं।

यस्य विज्ञानमात्रेण दूरं वा तमसो भ्रमः।
विनश्यत्येव सद्यस्तं मातस्त्वं कथयस्व मे॥४॥

हे माँ! जिनके जानने मात्र से अज्ञान का भ्रम दूर हो जाता है, उनके विषय में मुझे बतलाओ।

श्रीदेव्युवाच

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि रामस्याद्भुतकर्मणः।
स्तोत्रं यत्परमं गुह्यं शङ्करेण निरूपितम्॥५॥

श्रीदेवी बोली-

हे वत्स! सुनो अद्भुत कर्मवाले श्रीराम का अत्यन्त परम गोपनीय स्तोत्र बतलाता हूँ जो भगवान् श्री शंकर के द्वारा प्रतिपादति है।

यच्छ्रुत्वा च पठित्वा च धारयित्वा स्वमस्तके।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी नरः॥६॥

जिस मन्त्र को सुनकर, पढ़कर अथवा अपने मानस-पटल पर धारण करके मनुष्य सभी जगह सदा विजयी होता है एवं सभी सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

देवैरपि दुराधर्षो युद्धकर्मविशारदः।
रमावाणीपतिर्भूत्वा चान्ते यान्ति परां गतिम्॥७॥

युद्धकला में निपुण, देवताओं के द्वारा भी सभी प्रकार से अजेय, धनुषधारी श्रीराम के समान लक्ष्मी के पति अर्थात् धनवान् होकर अन्त में परमगति को प्राप्त करते हैं।

ॐ अस्य श्रीबालरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीबालरामचन्द्रो देवता चतुर्वर्गपुरुषार्थे पाठे विनियोगः।

इस बाल रामचन्द्र स्तवन के ऋषि वामदेव हैं; छन्द अनुष्टुप है; देवता श्रीबालरूप रामचन्द्र हैं; पुरुषार्थ-चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की प्राप्ति के लिये इसका जप करना चाहिये।

ॐ नमोऽस्तु ते भगवते वासुदेवाय धीमहि।
नमः शान्ताय कान्ताय राघवाय भवात्मने॥८॥

वासुदेव भगवान् को ध्यान करें। जो शान्त स्वभाव निर्मल कान्ति से युक्त संसार-स्वरूप अर्थात् (उत्पत्ति स्वरूप सभी जीवों की आत्मा) हैं ऐसे राघव को प्रणाम है।

रामाय विश्वनाथाय केवलाय भवाय च।
विज्ञानमनुरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः॥९॥

इस समस्त विश्व के स्वामी और समस्त उत्पत्ति के स्वामी विज्ञान के मन्त्र स्वरूप आनन्द के मूल (जड़) श्रीराम अर्थात् श्रीविष्णु को प्रणाम है।

केवलानुभवानन्दरूपिणे विश्वधारिणे।
प्रज्ञानात्मकरूपाय विश्वरूपाय ते नमः॥१०॥

केवल अनुभव से ही आनन्द-स्वरूप, विश्व को धारण करनेवाले विशेष ज्ञान के स्वरूप विश्व-स्वरूप श्रीराम को नमन है।

श्यामतामसरागाय नमः कालकराय च।
वेदान्तवेद्यरूपाय कालाधीशाय ते नमः॥११॥

श्यामवर्ण स्वरूप तमोगुण को अपने में समाहित करने वाले, काल को भी बनाने वाले और वेदान्त के द्वारा जानने योग्य, काल के भी स्वामी वे श्रीरामजी को नमस्कार है।

लोकहर्त्रे लोककर्त्रे निर्गुणाय परात्मने।
मातृणां नयनाह्लाददायिने विश्वमोहिने॥१२॥

तीनों लोकों के कर्ता तथा तीनों लोकों का संहार करनेवाले, निर्गुण, परमात्मा अपनी माताओं के नयनों को आनन्द देनेवाले, समस्त विश्व को अपने स्वरूप से आकर्षित करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी को नमस्कार है।

कौशल्यास्वर्णकुम्भाभस्तनक्षीरप्रमोदिने ।
पीत्वामृतरसो मातृन्वित्तरे वल्गुहासिने ॥१३॥

अपनी माँ कौशल्या के स्वर्ण कुम्भ के समान स्तन के अमृत-तुल्य दूध पान करके माता के बिछावन पर सुन्दर मुस्कान वाले श्रीराम को प्रणाम।

प्राङ्गणे पदसञ्चारविहारभुवि लुण्ठिने।
नितम्बकिङ्कणीनादैर्नृत्यते परिवर्तिने॥१४॥

जो अपने माता-पिता के प्रांगण में छोटे-छोटे चरणों के द्वारा विहार की जानेवाली भूमि पर लोटनेवाले हैं, कमर में बँधे हुए घुँघरू की ध्वनि के साथ घूम-घूमकर नाचनेवाले बालक-रूप श्रीरामचन्द्र जी को नमस्कार है।

रत्नमञ्जीरपादाय जानुभ्यां कलगामिने।
पितुरङ्कविहाराय पीतकौशेयवाससे॥१५॥

रत्न-जड़ित (अलंकृत) घुंघरू पहने चरणों वाले, घुटनों के बल चलते हुए, किलकारी करनेवाले तथा पिता की गोद में बिहार करनेवाले पीले रेशमी वस्त्र धारण करनेवाले बालक रूप श्रीरामचन्द्र जी को नमस्कार है।

वसुधानन्दकन्दाय प्रेमानन्दविहारिणे।
परमानन्दसंदोह वक्षो व्याघ्रनखाश्रये॥१६॥

संसार की भूमि के आनन्दकन्द (अर्थात् आनन्द का मूल (जड़) प्रेमरूपी आनन्द-सागर में विहार करनेवाले, आनन्द के स्रोत, बघनखा युक्त सुशोभित वक्षस्थलवाले बालरूप भगवान् श्रीरामको नमस्कार है।

भ्रातृभिश्चानुजैर्दिव्यैः क्रीडते बाहुबन्धनैः।
वैकुण्ठनिलयैर्भृत्यै सेवितातिद्वयाय च॥१७॥

बैकुण्ठ लोक के समान अपने प्यारे-प्यारे छोटे भाईयों के साथ हाथ से हाथ मिलाकर खेलते हुए ऐश्वर्यमान् और द्वैध भाव का त्याग करनेवाले लोगों के द्वारा सेवित बालरूप भगवान् श्रीराम को नमस्कार है।

पञ्चवर्षवयस्काय हरये बालरूपिणे।
इत्येतत्कथितं वत्स स्तोत्रं च परमाद्भुतम्॥१८॥

पाँच वर्ष की अवस्था वाले, संसार के कष्ट हरण करनेवाले, बालक-रूप श्री हरि को नमस्कार है, हे वत्स! मैंने तुझसे यह अद्भुत स्तोत्र कहा है।

यः पठेत् त्रिषु कालेषु यात्राकाले विशेषतः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति वाजपेयफलं लभेत्॥१९॥

इस स्तोत्र का पाठ जो तीनों काल करता है या कहीं यात्रा के समय विशेषकर पाठ करता है वह सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है एवं वाजसनेय यज्ञ करने का फल भी प्राप्त कर लेता है।

भूतप्रेतपिशाचादि डाकिनीयोगिनीगणः।
न बाध्यन्ते कदा वापि रामस्तोत्रं समाश्रयेत्॥२०॥

उस व्यक्ति को भूत-प्रेत, पिशाच, डाकिनी, योगिनी आदि कोई भी बाधा नहीं पहुँचा सकती अतः इस राम स्तोत्र का आश्रय ग्रहण करना चाहिए।

सुरासुरगणैश्चापि पूज्यते स नरः सदा।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥२१॥

वह मनुष्य सदा सुर (देवता) असुर (राक्षस) के द्वारा भी पूजित होता है। रोगी रोग से मुक्त हो जाता है और बँधा हुआ व्यक्ति बन्धन से भी मुक्त हो जाता है।

वत्सराज्जायते भक्तिः राघवेऽसुरमर्दिने।
षण्मासात् कवितासिद्धिः लक्ष्मीस्तस्य करे स्थिता॥२२॥

इस स्तोत्र का एक वर्ष तक पाठ करने पर असुरसंहारक श्रीराम में भक्ति उत्पन्न हो जाती है। छः मास में ही कविता की सिद्धि प्राप्त कर लेता है तथा उसके हाथ में सदा लक्ष्मी स्थित हो जाती है।

भुक्तिमुक्तिप्रदो लग्नो सर्वत्र विजयी भवेत्।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं कथितं पुत्र त्वयाग्रतः॥२३॥

इस स्तोत्र के पाठ से भोग एवं मुक्ति दोनों मिलती है, श्रीराम में आसक्त भक्त सर्वत्र (सभी जगह) विजय प्राप्त कर लेता है। यह सत्य से भी सत्य वचन तुम्हारे आगे मैंने कह दिया।

इति श्रीसनत्कुमारतन्त्रे जननीपुत्रसंवादे श्रीबालरामस्तवराज संपूर्णम्।

यह श्री सनत्कुमार तंत्र में माँ-पुत्र संवाद के रूप में श्रीबाल रामस्तवराज सम्पूर्ण हुआ।

सन्त कवि 'अनन्य' का एक पद

सतरहवीं शती के अन्तिम दशकों में तारनपुर, पटना के निवासी विधाता सिंह की भेंट अनन्य कवि से हुई थी, जिनका उल्लेख विधाता सिंह ने किया है। इसी अनन्य कवि की एक रचना यहाँ प्रस्तुत है।

वैष्णव कहत विष्णु बसत बैकुण्ठ धाम, शैव कहत शिवजू कैलास सुख भरे हैं।
कहै राधावल्लभी बिहारी बृन्दाबन ही में, रामानन्दी कहै राम अवध से न टरै है॥
एतो सब देव एक-देसिक अनन्य भनै, हम तुम सब आप ठौरन ज्यों धरै है।
चेतन अखंड जामें कोटि ब्रह्माण्ड उड़ैं ऐसो परब्रह्म कहा पूरिन में परे हैं॥

(स्रोत - हिन्दी साहित्य और बिहार, द्वितीय खण्ड, सं- शिवपूजन सहाय, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1963, पृ. 298-99)